कविग्राम

वर्ष 1, अंक 2, नवम्बर 2020

सृजन तीर्थ

आवरण चित्र : चिराग़ जैन

कविग्राम

वर्ष 1, अंक 2, नवम्बर 2020

परामर्श मंडल
सुरेन्द्र शर्मा
अरुण जैमिनी
विनीत चौहान

सम्पादक
चिराग़ जैन

सह सम्पादक
प्रवीण अग्रहरि

शोध तथा संग्रहण
मनीषा शुक्ला
शनि अवस्थी

प्रकाशन स्थल
नई दिल्ली

सर्वाधिकार
कविग्राम

सम्पर्क

8090904560

TheKavigram@gmail.com

kavigram.com

facebook.com/kavigram

उपरोक्त सभी पद मानद तथा अवैतनिक हैं।

यदि आप इस पत्रिका को प्रतिमाह अपने व्हाट्सएप पर प्राप्त करना चाहते हैं तो साथ में बने हरे चिह्न को स्पर्श करके सदस्यता हेतु अपना नाम लिख दें। इससे आप कविग्राम की प्रसारण सूची में सम्मिलित हो जायेंगे।

पत्रिका की सदस्यता निःशुल्क है।

सम्पादकीय

कविग्राम के प्रवेशांक पर देश-विदेश से विविध प्रतिक्रियाएँ मिलीं। सराहना को सिरहाने रखकर जब सुझावों और आलोचनाओं को झोला टटोला तो हमारे हाथ रीते रहे। यह सुखद भी था और चिन्ताजनक भी। बेहतरी की सम्भावना हमेशा बनी रहती है, हमें इस सम्भावना से अवगत कराने के लिए आपके सुझाव आवश्यक हैं।

कवियों की अव्यवस्थित जीवनशैली के चलते जो महत्त्वपूर्ण विषय अनदेखे रह गये थे, उनको समेट कर हमने आवरण-कथा तैयार की है। कवियों के जीवन में चुनौतियाँ अवश्य रही हैं किन्तु ऐसा नहीं कहा जा सकता कि समाज और सरकार ने कवियों के सम्मान की ओर कभी ध्यान दिया ही नहीं। सरस्वती पुत्रों के नाम पर प्रशासन की ओर से स्मारक बनवाये गये हैं। गाँव-कस्बों की जनता ने भी अपने क्षेत्र के कवियों की धरोहरों को सहेजने की दिशा में अनेक जतन किये हैं। कुछ सौभाग्यशाली कवियों के वंशज भी अपने पुरखे की डायरियों और स्मृतियों को सहेजने के लिए आगे आये हैं। यह और बात है कि इस प्रकार के प्रयास सामान्यतया बहुत प्रकाश में नहीं आ पाते।

देश भर में घूमते हुए ऐसे अनेक सृजन-तीर्थों की यात्रा मैंने की है। ऐसे स्थलों के चित्र तथा नोट्स मैं एक अरसे से एकत्रित करता रहा हूँ। जब कविग्राम की पहली आवरण कथा तैयार करने का विचार आया तो सृजन के पुरखों की इन यादों को लिख देने से बेहतर मुझे कुछ न सूझा।

न जाने क्यों, किसी कवि या लेखक की मूर्ति के सम्मुख जब-जब भी जाना हुआ है तो हर बार मेरे सृजन कोष में एक नया अध्याय जुड़ा ही है। मुझे ऐसा लगता है कि इन स्थलों पर अनलिखे विचारों का एक ऐसा आभामंडल विद्यमान है, जिससे गुज़रते ही आपकी वैचारिक सम्पदा में वृद्धि हो जाती है। सो, आपकी स्मृतियों में बसा ऐसा कोई स्थल इस आवरण-कथा से छूट रहा हो तो बताइयेगा!

कवि-कुनबे को दीपावली की शुभकामनाएँ!

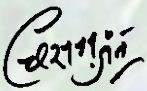

सृजन तीर्थ

देश भर में साहित्यकारों के नाम पर अनेकानेक स्मारक तथा संस्थान बनाये गये हैं। इनमें कुछ सरकारी प्रयासों से बने हैं तो कुछ साहित्यिक संस्थाओं के प्रयत्नों से। कुछ कवियों के परिवार ने भी अपने पुरखे की याद को ज़िन्दा रखने के लिए ऐसे प्रयास किये हैं। देश भर में यायावरी करते हुए सहेजे गये ऐसे ही कुछ स्थलों की बानगी प्रस्तुत कर रहे हैं चिराग़ जैन :

छाया : चिराग़ जैन

दिनकर - सिमरिया, बिहार

छाया : चिराग़ जैन

बाबा नागार्जुन - दरभंगा, बिहार

भारतीय संस्कृति के प्रसार तथा सर्वांगीण विकास में कवियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। यही कारण है कि देश भर में अनेक स्थानों पर कवियों के नाम पर सड़कों, उद्यानों, पुस्तकालयों तथा शिक्षण संस्थानों आदि का नामकरण किया गया है। कवि विशेष के जन्मस्थान पर उनकी प्रतिमा तथा संग्रहालय बनाने की प्रथा भी विद्यमान है।

सिमरिया में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के निवास स्थान को संग्रहालय बना दिया गया है और उस संग्रहालय की ओर जाने वाली सड़क पर दिनकर की प्रतिमा भी स्थापित है। इसी प्रकार दरभंगा के निकट बाबा नागार्जुन के पैतृक निवास के समीप ही उनके नाम से एक पुस्तकालय बनाया गया है। पुस्तकालय के प्रांगण में बाबा की एक प्रतिमा भी स्थापित की गयी है।

राजस्थान के सालासर में बालाजी मन्दिर के बाहर मीराबाई की जीवन्त प्रतिमा स्थापित है, जिसका चित्र हमने पत्रिका के आवरण पर प्रकाशित किया है। चित्तौड़गढ़ में मीरा मन्दिर विद्यमान है, जहाँ

मीराबाई की भव्य प्रतिमा विदेह प्रेम का प्रतीक बनकर विराजित है।

होशंगाबाद के पास बाबई नामक स्थान पर मुख्य सड़क के किनारे माखनलाल चतुर्वेदी जी की विराट प्रतिमा स्थापित है। भोपाल में पत्रकारिता का एक विश्वविद्यालय 'माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय' के नाम से संचालित है। प्रयाग में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के केंद्रीय पुस्तकालय के बाहर महाप्राण निराला की मूर्ति दिखाई देती है तो फ़िराक़ गोरखपुरी की जन्मस्थली बनवार पार में फ़िराक़ साहब के नाम से भी एक पुस्तकालय चल रहा है और उनकी मूर्ति भी लगायी गयी है। गोरखपुर मुख्यालय में भी उनकी भव्य मूर्ति है तथा एक सड़क उनके नाम से जानी जाती है। गत मई माह में बेतियाहाता चौराहे पर लगी उनकी प्रतिमा एक ट्रेलर की टक्कर से ध्वस्त हो गयी है। सम्भव है प्रशासन यथाशीघ्र वहाँ नई प्रतिमा की स्थापना करने हेतु क़दम उठाए। बनारस के मुंशी प्रेमचन्द के गाँव लमही में मुंशी जी की मूर्ति तथा उनके नाम से पुस्तकालय व विद्यालय संचालित हैं। कौसानी (उत्तराखण्ड) में सुमित्रानन्दन पन्त जी के घर को ही संग्रहालय बना दिया गया है। वहाँ उनकी प्रतिमा और उनकी निजी मेज-कुर्सियाँ सब संभाल कर रखी गयी हैं। इसके प्रांगण में पन्त जी की मूर्ति भी विद्यमान है।

छाया : चिराग़ जैन

मीराबाई - चित्तौड़गढ़, राजस्थान

छाया : गूगल (साभार)

प्रेमचंद - लमही, वाराणसी

छाया : गूगल (साभार)

सुमित्रानंदन पंत - कौसानी

दलपतराम – अहमदाबाद, गुजरात

आगरा में एक भव्य प्रेक्षागृह को 'सूरसदन' के नाम से जाना जाता है। दिल्ली में वज़ीराबाद के पास एक घाट को सूरघाट नाम दिया गया है। दिल्ली स्थित हिन्दी भवन में पण्डित गोपालप्रसाद व्यास तथा राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन की मूर्तियाँ स्थापित हैं। इसके अतिरिक्त भवन की दीवारें हिन्दी के दिवंगत लेखकों के तैलचित्रों से सुसज्जित हैं। हिन्दी भवन का यह प्रयोग हिन्दी के साधकों के प्रति अनूठा आभार ज्ञापन है।

कन्याकुमारी स्थित सन्त कवि तिरुवल्लुवर का भव्य स्मारक विश्व भर में विख्यात है ही। तिरुवल्लुवर का ही एक भव्य पद्मासन बिम्ब महाबलीपुरम में समुद्र तट पर और चेन्नई के मरीना तट पर भी स्थापित है। अहमदाबाद शहर में गुजराती कवि दलपतराम की जीवन्त प्रतिमा, उनके नाम से शहर का एक प्रमुख चौराहा तथा एक अस्पताल भी मौजूद है। पुदुच्चेरी में सुब्रमण्य भारती तथा हैदराबाद में तेलुगु कवि क्षेत्रय्या की प्रतिमाएँ विद्यमान हैं।

भारत के संसद भवन की सौध में गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर की विशाल प्रतिमा स्थापित है। कोलकाता में अनेक स्थानों पर टैगोर की प्रतिमाएँ मौजूद हैं। बल्लवपुर बीरभूम स्थित अमर कुटीर सोसाइटी में जापानी शैली में बनी टैगोर की आकर्षक प्रतिमा मौजूद है। नई दिल्ली में कोपर्निकस मार्ग स्थित ललित कला अकादमी के मुख्यालय को 'रबीन्द्र भवन' के नाम से जाना जाता है। सम्भवतः देश में सर्वाधिक मूर्तियाँ जिस कवि की हैं उनमें बांग्ला भाषा के कवि टैगोर और तमिल कवि तिरुवल्लुवर का नाम अग्रणी है।

रबीन्द्रनाथ टैगोर – संसद भवन

राउरकेला में वेदव्यास का भव्य मन्दिर है। ऐसी मान्यता है कि इसी स्थान पर महाभारत महाकाव्य की रचना हुई थी। राजस्थान के अनेक पुराने स्मारकों में वीरगाथा काल के कवियों की कविताएँ पत्थरों पर लिखी मिलती हैं।

छाया : चिराग़ जैन

काका हाथरसी - हाथरस, उत्तर प्रदेश

उधर कालिदास के नाम पर उज्जैन में 'कालिदास संस्कृत अकादमी' संचालित है। मध्यप्रदेश सरकार महाकवि कालिदास की स्मृति में 'कालिदास महोत्सव' का भी आयोजन करती है। राजस्थान के अलवर में नीतिशतक, वैराग्यशतक तथा श्रृंगार शतक के रचयिता भर्तृहरि के नाम पर दस दिन का भव्य मेला आयोजित किया जाता है।

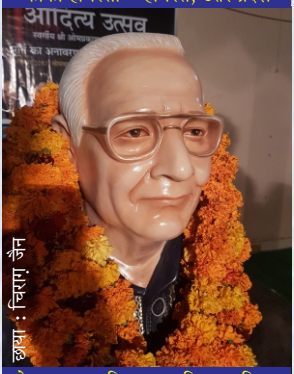

छाया : चिराग़ जैन

ओमप्रकाश आदित्य - रणसिका, हरियाणा

हिन्दी हास्य कविता को प्रतिष्ठित करने वाले काका हाथरसी की मूर्ति हाथरस में प्रतिष्ठित है। हास्य कवि ओमप्रकाश आदित्य के जन्मस्थान रणसिका में उनकी प्रतिमा स्थापित है। दिल्ली में मालवीय नगर स्थित उनके आवास के निकट एक पार्क का नाम भी ओमप्रकाश आदित्य जी के नाम पर फाइलों में दर्ज है, लेकिन रखरखाव के अभाव में उस पट्टिका का फिलहाल कोई अता-पता नहीं है। बदायूँ में भी बदायूँ क्लब के सामने वाली सड़क को डॉ. उर्मिलेश मार्ग के नाम से जाना जाता है और बदायूँ क्लब में उनकी मूर्ति भी स्थापित की गयी है। मुम्बई बम धमाकों में मारे गए हास्य कवि श्याम ज्वालामुखी के नाम पर 'श्याम ज्वालामुखी मार्ग' मुम्बई में मौजूद है।

छाया : अक्षत अशेष

उर्मिलेश शंखधर - बदायूँ

हाल ही में दिल्ली के सरस्वती विहार क्षेत्र में श्री जैमिनी हरियाणवी जी के नाम पर एक उद्यान का नामकरण किया गया है। मैनपुरी की करहल नगर पंचायत ने भी युवा कवि कमलेश शर्मा के नाम पर 'कवि कमलेश शर्मा मार्ग' का नामकरण किया है।

दिल्ली जंक्शन से प्रतापगढ़ के मध्य चलने वाली 'पद्मावत एक्सप्रेस' का नामकरण मलिक मुहम्मद जायसी की कृति 'पद्मावत' के नाम पर किया गया है और यह गाड़ी जायसी के जन्मस्थान 'जायस' पर रुकती है। क़ैफ़ी आज़मी के नाम पर क़ैफ़ियत एक्सप्रेस चलती है। मुम्बई में क़ैफ़ी आज़मी पार्क भी है।

बल्लीमारान में ग़ालिब की हवेली मौजूद है। मशहूर शायर मीर तक़ी मीर के नाम पर लखनऊ शहर फ़ख़्र तो करता है, लेकिन मीर के नाम पर लखनऊ के पास फुटपाथ पर लगे एक पत्थर से ज़्यादा कुछ नहीं है। पुराने लोग बताते हैं कि इसी 'निशान-ए-मीर' के आसपास ही कहीं मीर की मज़ार हुआ करती थी, लेकिन रेलवे स्टेशन बनाते हुए शहर के निर्माताओं ने उसे कहीं ग़ायब कर दिया। कुछ लोग यह भी मानते हैं कि लखनऊ जंक्शन के प्लेटफॉर्म संख्या पाँच पर रेल की पटरियों के बीच बनी पीर बाबा की मज़ार ही मीर तक़ी मीर की मज़ार है। यदि यह बात सच है तो इससे हमें पता चलता है कि हमने अपने फ़क़ीरों के साथ कैसा बर्ताव किया है। क्योंकि जिसके दोनों ओर से रेलगाड़ियाँ धड़धड़ाती हुई गुज़रती हैं, वही मीर इन मिसरों का भी शायर है— **सिरहाने मीर के आहिस्ता बोलो / अभी टुक रोते-रोते सो गया है।** सुनते हैं कि नज़ीर साहब के इन्तक़ाल के वक़्त आगरे के ताजगंज के लोगों की यह ज़िद्द थी कि नज़ीर साहब, ताजगंज को छोड़कर कभी नहीं जा सकते, इसलिए मरने के बाद भी वे यहीं रहेंगे। ये और बात है कि आगरे में ताजमहल का दीदार करने वालों में कोई दीवाना ही रईसी के मक़बरे से फ़ुर्सत पाकर ताजगंज की गलियों में जनता के शाइर से मिलने जा पाता है। दिल्ली में बारापुल्लाह सेतु से गुज़रते हुए एक पुराना खण्डहर दिखाई देता है। बहुत कम लोगों को पता है कि यह खंडहर अब्दुर्रहीम खानखाना का मक़बरा है।

ऐसे सैंकड़ों स्मारक साहित्य साधकों की अनकही कहानियाँ कहने के लिये देश के हर कोने में मौजूद हैं। आपने भी इन स्मारकों के दर्शन किये होंगे। आपसे अनुरोध है कि ऐसी जो भी जानकारी आपके पास उपलब्ध है कृपया हमें उससे अवगत करायें ताकि क़लम के सिपाहियों की इन धरोहरों से जनता को परिचित करवाया जा सके। ■

तारीख़ है गवाह

नवम्बर

1 नवम्बर	पुण्यतिथि	श्री बृज शुक्ल 'घायल'	
	जन्मदिन	श्री अब्दुल अय्यूब ग़ौरी	facebook
2 नवम्बर	जन्मदिन	सुश्री बरखा शुक्ला सिंह	facebook
	जन्मदिन	श्री हाशिम फ़िरोज़ाबादी	facebook
3 नवम्बर	जन्मदिन	श्री अन्सार क़म्बरी	facebook
4 नवम्बर	जयन्ती	श्री अशोक साहिल	
	पुण्यतिथि	श्री नवनीत हुल्लड़	
5 नवम्बर	पुण्यतिथि	बाबा नागार्जुन	
	जयन्ती	श्री ओमप्रकाश आदित्य	
	जन्मदिन	श्री शम्भू सिंह 'मनहर'	facebook
8 नवम्बर	जयन्ती	श्री कृष्ण बिहारी 'नूर'	
	जन्मदिन	श्री शैलेष लोढ़ा	facebook
	जन्मदिन	श्री आशीष 'अनल'	facebook
	जन्मदिन	श्री पवन आगरी	facebook
11 नवम्बर	पुण्यतिथि	श्री कन्हैयालाल सेठिया	
	जन्मदिन	श्री आनन्द क्रान्तिवर्द्धन	facebook
	जन्मदिन	श्री सन्दीप शर्मा	facebook
12 नवम्बर	जन्मदिन	डॉ. प्रवीण शुक्ल	facebook
14 नवम्बर	जयन्ती	श्री बलवीर सिंह 'रंग'	
15 नवम्बर	पुण्यतिथि	श्री जयशंकर प्रसाद	
	जयन्ती	श्री निर्भय हाथरसी	
	जन्मदिन	श्री हलचल हरियाणवी	facebook
	जन्मदिन	सुश्री दीप्ति मिश्र	facebook
	जन्मदिन	श्री बृजेश द्विवेदी	facebook
16 नवम्बर	पुण्यतिथि	श्री चन्द्रसेन विराट	
18 नवम्बर	जन्मदिन	डॉ. रमा सिंह	facebook
	जन्मदिन	श्री अनिल चौबे	facebook
20 नवम्बर	जन्मदिन	डॉ. कमलेश मौर्य 'मृदु'	facebook
23 नवम्बर	जन्मदिन	डॉ. कीर्ति काले	facebook
24 नवम्बर	जन्मदिन	श्री हुक्का बिजनौरी	
26 नवम्बर	जन्मदिन	श्री मुनव्वर राणा	facebook
27 नवम्बर	जयन्ती	डॉ. हरिवंश राय बच्चन	
	पुण्यतिथि	डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन'	
28 नवम्बर	पुण्यतिथि	श्री रामरिख मनहर	

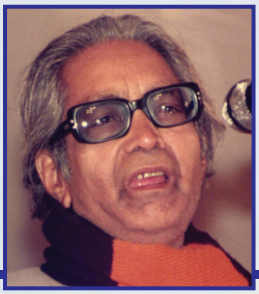

बिखरे
तो ऐसे बिखरे तुम

नेहरू जी के निधन पर लिखा गया गीत

सिमटे, तो ऐसे सिमटे तुम
बन्धे पँखुरियों से गुलाब की
बिखरे, तो ऐसे बिखरे तुम
खेत-खेत की फसल हो गये

जब-जब गेहूँ धान पकेंगे, तुम किसान की हँसी बनोगे
तीरथ-तीरथ लहर-लहर पर, किरनों से जय हिन्द लिखोगे
जागे, तो ऐसे जागे तुम, कड़ियाँ-हथकड़ियाँ सब टूटीं
सोये, तो ऐसे सोये तुम
कोटि-कोटि दृग सजल हो गये

धरती पर पदचिह्न तुम्हारे, पृष्ठ बन गये इतिहासों के
फटने से भूगोल रह गया, नखत रह गये आकाशों के
घुमड़े, तो ऐसे घुमड़े तुम, खण्डहर को जीवन दे डाला
रीते, तो ऐसे रीते तुम
सात समुन्दर विकल हो गये

कण-कण में रचकर स्वदेश के, तुम मेंहदी से छूट गये हो
प्राणों से रूठो तो जानें, जीवन से तो रूठ गये हो
महके, तो ऐसे महके तुम, सम्मोहित बारूद हो गयी
दहके, तो ऐसे दहके तुम
सावन-भादो विफल हो गये

■ भारत भूषण

गंगाजल अपमानित होता है

■ चन्द्रसेन विराट

यदि आँसू को तुम पानी कहते हो
तो गंगाजल अपमानित होता है

पीड़ा, ब्रह्मा की आदि भावना है
आँसू ही उसका पहला बेटा है
वह अन्तरात्मा से धावित-पोषित
उसने प्रभु का आशीष समेटा है
यदि भरी आँख पर मुस्काते हो तुम
तो सिन्धु अतल अपमानित होता है

सौन्दर्य नयन से पी लो कब रोका
लेकिन तुम उसको माँसल परस न दो
लजवन्ती का अंकुर न मुरझ जाये
निरखो केवल छूने की हवस न हो
यदि दृष्टि वासनामयी रखते हो तुम
दृग का काजल अपमानित होता है

मालूम नहीं कब घटा घिरे बरसे
चातक के प्यासे अधर नहा जायें?
या बिन बरसे गुज़रें सब मौसम
हर प्यास तड़पती प्यासी रह जाये
यदि चातक स्वाति नखत को गाली दे
तो हर बादल अपमानित होता है

भीगी पलकों, दो हृदय जहाँ मिल लें
उस तीरथ से अलका भी शरमाये
मुट्ठी भर रेती प्रिय का स्मारक हो
बस अगर भावना से रख दी जाये?
प्रेमी का अगर घरौन्दा ढहाते हो
तो ताजमहल अपमानित होता है

उलझे धागे सुलझाओ समय!

क़िस्मत के उलझे धागे सुलझाओ समय!
कभी किसानों की पीड़ा भी गाओ समय!

राजाओं की चरण-वन्दना तुमने निशदिन गाई
सत्तालोलुप महाठगों की करते रहे बड़ाई
तनिक प्रजा के हिस्से में भी आओ समय!

मिट्टी को सोना करने में, देह गलाता सारी
उस सोने को मिट्टी की क़ीमत देता व्यापारी
व्यापारी को कभी खेत में लाओ समय!

बिटिया के विवाह की तिथियाँ पाला निगल गया है
राहत-राशि नेताजी का साला निगल गया है
भ्रष्टतन्त्र को कोई सबक़ सिखाओ समय!

बैंक मैनेजर कुरकी का आदेश लिये फिरता है
बिजली का बिल आसमान की बिजली सा गिरता है
जैसे भी हो इसके प्राण बचाओ समय!

ख़ून-पसीने की रोटी पर नज़र गड़ी है सबकी
इसकी चिन्ता नहीं किसी को, इसे पड़ी है सबकी
इसके दु:ख की गठरी कभी उठाओ समय!

facebook ■ प्रमोद पवैया

उम्मीद की दस्तक

एक सामान-सा वजूद मेरा
वो मुझे घर में रख के भूल गया

ख़ुशी भी जान ले सकती है इक दिन
मुझे इस ग़म का अन्दाज़ा नहीं था

हवा के काम सभी कर गए बख़ूबी हम
मग़र चिराग़ बुझाना हमें नहीं आया

हज़ारों चाहनेवाले थे उसके
जिसे तन्हाइयों ने मार डाला

चन्द ख़ुशियों का कर्ज़ था मुझ पर
और वो ज़िन्दगी वसूल गया

वो बहाने से जा भी सकता है
हम इसी डर से रूठते ही नहीं

अब सँवरने का लुत्फ़ जाता रहा
आईने में बिखर रहे हैं हम

किस भरोसे जियेगा दरवाज़ा
कोई उम्मीद तो हो दस्तक की

facebook ■ संजू शब्दिता

दल बदल

एक नेता
दल बदलकर घर लौटे
उन्हें पत्नी का पत्र मिला
(जो कई महीनों से
मायके गई हुई थी)
लिखा था –
"नम्मो के डैडी!
तुम्हारे साथ रहते-रहते
बोर हो गए
अब हमने राधेलाल जी से
दाम्पत्य समझौता कर लिया है
ये समझौता
समान विचारों के
आधार पर हुआ है
हमारे दल-बदल कार्य को
लाइटली लेना
और हम भी
अपने पद-बदल कार्य को
तुमसे लाइटली लिवाएंगे।"

उनका माथा ठनका
सोचने लगे
दल-बदल का
एक दिन ऐसा दुफल मिलेगा
कभी नहीं सोचा था।

उन्होंने पुनः लिखा–
"नम्मो की जीजी
तुम अपने घर
वापस आ जाओ
मैं भी पुराने दल में
वापस जा रहा हूँ।"

मैडम का दिमाग़
अभी ठण्डा नहीं हुआ
फिर उन्होंने लिखा–
"पल-पल में
दल-बदल करते रहे हो
एक दल में कुछ समय
रुककर रहना
सहानुभूतिपूर्ण विचार करूंगी
आम का अचार
डहली में रखा है
इसे उलटते-पलटते रहना
हम तो यहाँ बड़े आनन्द की
ज़िन्दगी बिता रहे हैं
-तुम्हारी पुरानी पत्नी
अब मिसेज राधेलाल।"

■ बरसाने लाल चतुर्वेदी

एक बार फिर से बाँसुरी बजे

एक बार, हाँ केवल एक बार
फिर से वह बाँसुरी बजे
कि यमुना के तट पर फिर नटवर-नन्दलाल
खेलें भी खेल संग ले गोपी-ग्वाल
एक बार यमुना में गेन्द जाए खो
और विषधर के फन-फन पर फिर नर्तन हो
गोकुल-सी सरसभूमि शोक-भय तजे
एक बार फिर से वह बाँसुरी बजे

एक बार हो फिर से प्रेम की विजय
मानवता का दानवता करने ध्वंस
कृष्ण को चुनौती फिर भेजे यदि कंस
राधा उर में फिर से भाव जगे आज
जनहित के लिए गए मेरे सरताज
राधिका न बाधा है -इतना निश्चय
एक बार हो फिर से प्रेम की विजय

एक बार हो फिर से पांचजन्य-घोष
कौरव-कुल समझ जाए अब तो यह मर्म
विजय-केतु फहराता है सदैव धर्म
संख्या की नहीं, हुई सत्य की विजय
शंखध्वनि हो, हो फिर से पाप का विलय
भृकुटि तने, सरल हृदय में भी हो रोष
एक बार हो फिर से पांचजन्य-घोष

एक बार हमको वह सारथी मिले
पार्थ अगर विचलित हो, वह दे उपदेश
कैसा है मोह-शोक, कैसा यह क्लेश
फल की आसक्ति त्याग करना है कर्म
हार-जीत मत विचार, है प्रहार धर्म
टूटे प्रण फिर से, रथचक्र फिर चले
एक बार फिर से वह सारथी मिले

■ राधेश्याम प्रगल्भ

सिराय के दरिया खइयो

धरती वीर विहीना नांई रहनी
काऊ धोखे में मति रहियो
काऊ धोखे में मति रहियो
नेंक सिराय के दरिया खइयो

नित उधार के हथियारन की नाहक हाट लगावै
बन्दर घुड़की दै-दै कें तू, का मोको डरपावै
कहूँ ऐसौ ना होय तिरंगौ, दुनिया पै फहरावै
बंदिश काऊ मुलक की नांई सहनी
काऊ धोखे में मति रहियो

हमने बड़े-बड़े रावण देखे, बड़ी-बड़ी देखीं लंका
हमने बड़े-बड़े कंस पछारे, नांहि काल की शंका
मरिवे से कब-कब डरपे हैं, धीर वीर रणबंका
केशर पाग बिरथ में नांई पहनी
काऊ धोखे में मति रहियो

रणभूमि कैसे भूलेगी, मानिक शा, करियप्पा
सदा भवानी रहे दाहिने, सन्मुख गणपति बप्पा
अबकी तोसो कहवाइ देइंगे, हम पानी ते पप्पा
हमने हाथनि चुड़ियाँ नांई पहनी
काऊ धोखे में मति रहियो

■ पवन चौहान

पाँच दीप दीवाली के

सुलग-सुलग री ज्योत, दीप से दीप जलें
कर-कंकण बज उठें, भूमि पर प्राण फलें
माखनलाल चतुर्वेदी

नई हुई फिर रस्म पुरानी, दीवाली के दीप जले
शाम सुहानी, रात सुहानी, दीवाली के दीप जले
जलते दीप रात के दिल में घाव लगाते जाते हैं
शब का चेहरा है नूरानी, दीवाली के दीप जले
फ़िराक़ गोरखपुरी

तुम मनाते हो जिसे कहकर दिवाली
यह नहीं कोई प्रथा नूतन-निराली
आज भी जग में अमा की रात काली
स्नेह से नव-मृत्तिका के पात्र ख़ाली
शिवमंगल सिंह 'सुमन'

दिशि-दिशि में दीपों की आलोक ध्वजा फहराओ
देह-प्रहित शुभ शुक्र आज तुम घर-घर में उग आओ
व्योम-भाल पर अंकित कर दो, ज्योति-हर्षिणी क्रीड़ा
सप्तवर्ण सौन्दर्य! प्रभामंडल में प्राण जगाओ!
रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'

भरी दुपहरी में अन्धियारा, सूरज परछाई से हारा
अंतरतम का नेह निचोड़ें, बुझी हुई बाती सुलगाएँ
आओ फिर से दीया जलाएँ
अटल बिहारी वाजपेयी

कवि सम्मेलन संग्रहालय

लालक़िले के कवि-सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए श्री जवाहरलाल नेहरू। साथ में हैं पं. गोपालप्रसाद व्यास, श्री मैथिलीशरण गुप्त और श्री रामधारी सिंह दिनकर
(चित्र साभार : हिन्दी भवन)

कवि सम्मेलन संग्रहालय

लालक़िले के कवि-सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए श्री अटलबिहारी वाजपेयी। साथ में हैं दिल्ली के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मदनलाल खुराना
(चित्र साभार : हिन्दी अकादमी, दिल्ली)

पुराने चावल ने 5 अक्टूबर को सौ एपिसोड पूरे कर लिये। वाचिक परम्परा की इस सर्वाधिक समृद्ध डिजिटल लायब्रेरी अब हर सप्ताह दो नये वीडियो जुड़ जाते हैं। अक्टूबर में प्रसारित हुए वीडियो की सूची में आप जो वीडियो देखना चाहें, उसे स्पर्श करें :

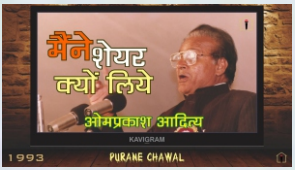

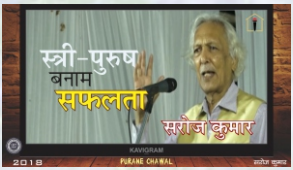

अक्टूबर 2020

मंच वरिष्ठता और मैं

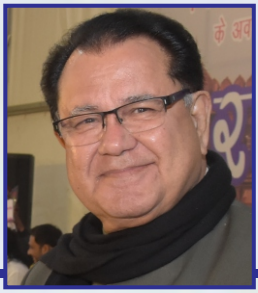

आज मैं वरिष्ठ कवि हूँ। मैं कब वरिष्ठ हो गया, मुझे पता ही नहीं चला। सबको एक दिन वरिष्ठ होना पड़ता है। वरिष्ठ होने से कोई बच नहीं सकता। वरिष्ठ कवि का नम्बर लास्ट में आता है, जब सारे कवि अपना काव्य-पाठ करके व्हाट्सएप में और सेल्फ़ी लेने में व्यस्त हो चुके होते हैं और श्रोताओं की तालियाँ बजाने की क्षमता जवाब दे चुकी होती है। जो कवि ऐसी स्थिति में काव्य-पाठ न कर सके, उसे वरिष्ठ होने का जोख़िम नहीं उठाना चाहिए।

समझदार कवि, पहले लोकप्रिय होता है फिर वरिष्ठ होता है। मैं यहाँ ग़लती कर गया। मैं लोकप्रिय हुए बिना ही वरिष्ठ हो गया। एक कवि, चाहे कितना भी अच्छा कवि हो; अगर बिना लोकप्रिय हुए वरिष्ठ हो जाये तो वह वरिष्ठता उसके लिये घातक सिद्ध हो सकती है। उसे बिना तालियों के काव्य-पाठ करना पड़ सकता है। और कभी बिना श्रोताओं के भी!

बिना लोकप्रिय हुए वरिष्ठ हो जाना कितना घातक है, इसका एहसास मुझे पिछले साल कांकरोली कवि-सम्मेलन में हुआ। वहाँ मैं पहली बार गया था। संचालक ने मेरा नाम पुकारा — 'अब आ रहे हैं आज के वरिष्ठ कवि आश करण अटल।'

...एक ताली नहीं बजी। मेरे पेट के थोड़ा ऊपर और गले के थोड़ा नीचे कहीं पर धुकधुकी शुरू हो गई। शायद मेरी वरिष्ठता श्रोताओं के गले नहीं उतरी। सबकी आँखों में एक ही सवाल तैर रहा था — वरिष्ठ होना तो बाद की बात है, पहले ये बताओ कि ये मंच पर आया कब था?

मैं अपने वरिष्ठ होने पर शर्मिन्दा था। ठीक वैसे ही जैसे एक फिल्म में बलराज साहनी अपने बाप होने पर शर्मिन्दा होते हैं। उस फिल्म में फिल्म के हीरो धर्मेन्द्र को उसकी माँ पाल-पोसकर बड़ा करती है। उसको बचपन में बताया जाता है कि उसका पिता अब दुनिया में नहीं है। जबकि उसका पिता बलराज साहनी ज़िन्दा है। एक दिन बलराज साहनी अचानक प्रकट होते हैं। धर्मेन्द्र की माँ, धर्मेन्द्र को बताती है कि ये तेरे पिता हैं। अब धर्मेन्द्र को काटो तो ख़ून नहीं। वह वैसे ही चौंकता है, जैसे कांकरोली के श्रोता मेरी वरिष्ठता पर चौंके। बलराज साहनी भी अपने बाप होने पर वैसे ही शर्मिन्दा हुए, जैसे मैं अपने वरिष्ठ होने पर शर्मिन्दा हुआ। लानत है ऐसी वरिष्ठता पर।

वरिष्ठ होने का लाभ सबको नहीं मिलता। किसी-किसी को मिलता है। जैसे राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द जी को वरिष्ठ होने का लाभ मिला। लेकिन लालकृष्ण आडवाणी जी को नहीं मिला। वे भी वरिष्ठ हुए। और डंके की चोट पर वरिष्ठ हुए। लेकिन उनका वरिष्ठ होना किसी काम नहीं आया। सॉरी आडवाणी जी, आपका और मेरा वरिष्ठ होना बेकार गया। खाया-पिया कुछ नहीं, ग्लास तोड़ा, बारह आना बिल। आई हेट वरिष्ठता।

पहले लोग वरिष्ठता भुनाते थे। आजकल छिपाते हैं। बाल-वाल डाई करके, चौकड़ी वाली शर्ट पहन के कुछ साल वरिष्ठता छिपाने में सफल भी हो जाते हैं। फिर एक उम्र के बाद वरिष्ठता छिपाना असम्भव हो जाता है। ऐसी वरिष्ठता बाँस के पौधे की तरह एकदम से उगती है। तब वरिष्ठ भी खिसियाते हुए अपनी वरिष्ठता स्वीकार कर लेता है और उसे भुनाने के लिये आगे आ जाता है कि, 'देखो, मैं कब से वरिष्ठ हुआ बैठा हूँ। मुझे सम्मान क्यों नहीं देते!'

facebook ■ **आश करण अटल**

हमारे चेहरे पे ग़म भी नहीं, ख़ुशी भी नहीं
अंधेरा पूरा नहीं, पूरी रौशनी भी नहीं
अजीब बात है दीपावली के अवसर पर
करोड़ों बच्चों के हाथों में फुलझड़ी भी नहीं

कृष्णानन्द चौबे

साहित्यिक पत्रकारिता का नया आयाम पुष्पांजलि

पुष्पांजलि चेन्नई से प्रकाशित होने वाली एक नई साहित्यिक पाक्षिकी है। इस पत्रिका का स्वरूप एक ई-पत्रिका जैसा है जिसे विशेष रूप मोबाइल प्रयोक्ताओं के लिये तैयार किया गया है।

पुष्पांजलि में प्रसिद्ध साहित्यकारों की रचनाएँ प्रकाशित की जा रही हैं, जिन्हें ऑडियो-वीडियो द्वारा भी जोड़ा गया है। इससे पत्रिका पठनीय ही नहीं वरन् श्रवणीय भी बन गयी है। कुछ साहित्यकारों की पुस्तकों और प्रसिद्ध संगीतकारों की धुनों के लिंक भी इस पत्रिका में हैं, जो आपको एक अलग ही भावदशा तक ले जाने में समर्थ हैं।

श्री गोपालदास नीरज जी की पुण्यस्मृति से प्रारम्भ इस पत्रिका के पाँच अंक प्रकाशित हो चुके हैं। पत्रिका में साहित्य जगत् की अत्यंत महत्वपूर्ण तथा दुर्लभ सामग्री को सम्मिलित किया जाता है। ओशो का एक लेख पत्रिका में नियमित स्तम्भ के रूप में प्रकाशित होता है। कविग्राम शृंखला के अन्तर्गत कवियों के जन्मदिन या पुण्यतिथि पर उनके काव्यपाठ के वीडियो भी दिये जा रहे हैं। पुष्पांजलि केवल व्हाट्सएप पर उपलब्ध है और इसका मूल्य है मात्र आपकी एक मुस्कान। आप 8610502230 मोबाइल नम्बर पर संदेश भेजकर पत्रिका नियमित रूप से नि:शुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

फिर से शुरू हो रहे हैं कवि-सम्मेलन

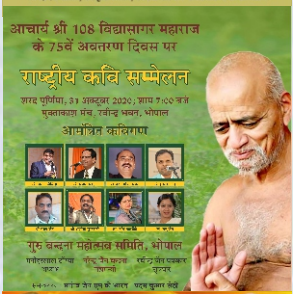

महामारी के कारण होली से अब तक कवि-सम्मेलनों के नाम पर कुछेक ऑनलाइन कार्यक्रमों की ही उपस्थिति दर्ज की जा सकती है।

गत माह से कवि-सम्मेलन के भव्य कार्यक्रमों का दौर धीरे-धीरे ही सही लेकिन लौट रहा है। दिनाँक नौ अक्टूबर को दैनिक जागरण की पहल पर कानपुर में कवि-सम्मेलन का पुराना स्वरूप पुन: देखने को मिला। उधर 13 अक्टूबर को मध्य प्रदेश के जावरा में जैन समाज के आयोजन में भव्य कवि-सम्मेलन आयोजित किया गया। मध्यप्रदेश में ही संस्कृति विभाग के सौजन्य से शौर्य स्मारक की चौथी वर्षगाँठ के अवसर पर दिनाँक 16 अक्टूबर को कविता का महोत्सव हुआ। अम्बेडकर नगर में कोरोनो योद्धा सम्मान में कवि-सम्मेलन का आयोजन हुआ। भोपाल में दिनाँक 31 अक्टूबर को जैनाचार्य श्री विद्यासागर जी की जयन्ती के अवसर पर कवि-सम्मेलन आयोजित हुआ।

श्रद्धांजलि

श्री ताराप्रकाश जोशी

जन्म : 25 जनवरी 1933
निधन : 06 अक्टूबर 2020

मेरा वेतन ऐसे रानी
जैसे गर्म तवे पर पानी

एक कसैली कैन्टीन से, थकन-उदासी का नाता है
वेतन के दिन-सा निश्चित ही, पहला बिल उसका आता है
हर उधार की रीत उम्र सी, जो पाई सो लौटानी

दफ़्तर से घर तक फैले हैं, ऋणदाता के गर्म तक़ाज़े
ओछी फटी हुई चादर में, एक ढकूँ तो दूजी लाजे
कर्ज़ा लेकर कर्ज़ चुकाना, अंगारों से आग बुझानी

फीस, ड्रेस, कॉपियाँ, किताबें, आंगन में आवाज़ें अनगिन
ज़रूरतों से बोझिल उगता, ज़रूरतों में ढल जाता दिन
अस्पताल के किसी वॉर्ड-से, घर में सारी उम्र बितानी

ढली दुपहरी-सी आई हो, दिन समेत टूटे पिछवाड़े
छाया-सी बढ़ती उधड़न से, झाँक रहे हैं अंग उघाड़े
तुझको और दिलासा देना, रिसते घावों कील चुभानी

ये अभाव के दिन लावे-से, घुटते तेरे-मेरे मन में
अग्निगीत बनकर फैलेंगे, गाँवों-शहरों में, जन-जन में
जिस दिन नया सूर्य जन्मेगा, तेरे जूड़े कली लगानी

कविग्राम

कविग्राम की पत्रिका यदि आपको व्हाट्सएप संख्या 8090904560 के अतिरिक्त किसी माध्यम से प्राप्त हो रही है तो कृपया उक्त नम्बर पर अपना नाम तथा शहर का नाम लिखकर व्हाट्सएप करें। अगर आपने पहले इस प्रक्रिया के तहत सदस्यता अनुरोध किया है और आपका नाम पंजीकृत नहीं हो पाया है, तो कृपया एक बार पुनः अपना नाम तथा शहर का नाम 8090904560 पर लिखकर व्हाट्सएप करें।

कविग्राम परिवार के पास सीमित मानव संसाधन हैं। ऐसे में बहुत संभव है कि आपका संदेश हमसे छूट गया हो। इस स्थिति में कविग्राम को अपना परिवार मानते हुए कृपया हमें क्षमा करें और उक्त प्रक्रिया पर दोबारा प्रयास करें। हम आपके आभारी रहेंगे। एक बार आपका नम्बर हमारे डाटा बेस में दर्ज हो जाने के बाद आपको प्रत्येक माह यह पत्रिका आवश्यक रूप से भेजी जाती रहेगी।

अगले अंक में...

भारतीय राजनीति में सक्रिय भूमिका निर्वाह करने वाले कवियों पर केन्द्रित आवरण कथा के साथ ही कवि-सम्मेलनों से जुड़ी ढेर सारी रोचक तथा ज्ञानवर्द्धक सामग्री।